राजस्थान सूचना सहायक परीक्षा

(FOR RSMSSB & IBPS)

Golden Edition

PART - 2

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

COMPLETE GK & REASONING

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान सूचना सहायक परीक्षा

FOR RSMSSB & IBPS

भाग – 2

COMPLETE GK & REASONING

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान सूचना सहायक**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली **"राजस्थान सूचना सहायक" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

मूल्य :

संस्करण : नवीनतम (2023)

सूचना सहायक - 2023 के नोट्स खरीदने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें

whatsapp करें – https://wa.link/j53pta

online order करें – https://bit.ly/3xjbC7f

या फिर इस नंबर पर कॉल करके अपना order बुक करवाएं -

9887809083

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान का भूगोल एवं प्राकृतिक संसाधन

1. राज्य की स्थिति एवं विस्तार	1-5
2. राज्य के भौतिक प्रदेश	6-11
3. राजस्थान की नदियाँ	12-16
4. राजस्थान की झीलें	16-18
5. राजस्थान की जलवायु	19-19
6. राजस्थान में वन, वन्य जीव एवं वनस्पति	20-23
7. राजस्थान में कृषि एवं प्रमुख फसलें	24-27
8. राज्य की प्रमुख सिंचाई व बहुउद्देशीय परियोजनाएं	27-29
9. राजस्थान में पशुधन	29-30
10. राजस्थान में प्रमुख खनिज क्षेत्र व संसाधन	31-33
11. राजस्थान में जनसंख्या वितरण, विकास, साक्षरता, और लिंगानुपात	33-39
12. राजस्थान के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र एवं उद्योग	39-41

राजस्थान का इतिहास

1. इतिहास के स्रोत	42-46
2. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं	47-49
3. गुर्जर प्रतिहार वंश	50-52

4. मेवाड़ का इतिहास	53-57
5. मेवाड़-मारवाड़ सम्बन्ध	58-62
6. राठौड़ वंश एवं मारवाड़ वंश	63-71
7. कच्छवाहा वंश	72-76
8. बीकानेर के वंशज	76-82
9. किशनगढ़ का राठौड़ वंश एवं राजस्थान के अन्य वंश	83-87
10. राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां	88-91
11. राजस्थान में 1857 की क्रांति	91-96
12. राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	96-105
13. प्रजामंडल आंदोलन	106-109
14. राजस्थान का एकीकरण	109-113
15. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	114-120

कला संस्कृति

1. राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ	120-125
2. राजस्थान के किले, महल एवं हवेलियाँ	125-133
3. राजस्थान के प्रमुख मंदिर	133-134
4. राज्य का साहित्य एवं बोलियाँ	135-138
5. राज्य की चित्रकला	138-143
6. राजस्थान की हस्तकला	143-144

7. राजस्थान के प्रसिद्ध मेले 144-146
8. राजस्थान के प्रमुख त्यौहार 147-149
9. राजस्थान के प्रमुख लोकगीत एवं लोक नृत्य 150-153
10. राजस्थानी पहनावा एवं आभूषण 154-155
11. सामाजिक रीति - रिवाज एवं प्रथाएँ 155-158
12. राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय 159-163
13. प्रमुख पर्यटन केंद्र 163-166

भारत का सामान्य ज्ञान

(वन लाइनर GK)

1. भारत का इतिहास 167 – 178
2. भारतीय संविधान 179 – 188
3. भारत का भूगोल 189 – 201
- विविध 202– 251
- कंप्यूटर के महत्त्वपूर्ण तथ्य 252–255

रीजनिंग

1. श्रृंखला 256 – 271
2. क्रम व्यवस्था 272 – 277
3. सादृश्यता 277 – 288

4. दर्पण एवं जल प्रितिबिम्ब	288 - 296
5. घन एवं पासा	296 - 312
6. कैलेंडर	312 - 321
7. लुप्त संख्या	321 - 324
8. वेन आरेख	324 - 327
9. रक्त सम्बन्ध	328 - 334
10.कोडिंग – डिकोडिंग	334 - 340
11. आकृतियों की गणना	341 - 343
12.डाटा इंटरप्रिटेशन	344 - 350
13.डाटा पर्याप्तता	351 - 359
14.न्याय नियमन	360 - 370
15.कथन एवं तर्क	370 - 375
16. कथन एवं निष्कर्ष	375 - 379
17.कथन एवं मान्यताएँ या पूर्वानुमान	379 - 386

अध्याय – 2

राजस्थान के भौतिक प्रदेश

राजस्थान को भौगोलिक आधार पर चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है-

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश
2. अरावली पर्वतमाला
3. पूर्वी मैदानी प्रदेश
4. दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेशः- राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का अवशेष है, और अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैण्ड का हिस्सा है।

वर्तमान में रेगिस्तान का विस्तार राज्य के कुल 61.11 प्रतिशत हिस्से पर है।

अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में कुल 12 जिलें स्थित है। जो निम्नलिखित है-

बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़ , श्रीगंगानगर, जोधपुर, जैसलमेर, जालोर, बाड़मेर, पाली, सीकर, झुंझुनू, नागौर

नोटः – राज्य के सिरोही जिलें में मरुस्थल का विस्तार नहीं है।

थार का रेगिस्तान राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग और पाकिस्तान में सिंध तथा पंजाब तक फैला है।

यह उत्तर – पश्चिम में 645 किमी. लम्बा और 360 किमी चौड़ा है । इस का सामान्य ढाल उत्तर – पूर्व से दक्षिण –पश्चिम की ओर है । मरुस्थल का ऊँचा उठा हुआ उत्तर-पूर्वी भाग 'थली' तथा दक्षिण-पश्चिम भाग नीचे का 'तली' कहलाता है।

इस मरुस्थलीय क्षेत्र में राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा निवास करता है। यह विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल है तथा इसके अलावा यह विश्व में जैव विविधता वाला मरुस्थल भी है।

थार के मरुस्थल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ है कि यह विश्व का एक मात्र ऐसा मरुस्थल है, जिसके निर्माण में दक्षिण-पश्चिम मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान है। थार का मरुस्थल भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र को भी नियंत्रित करता है ।

इस क्षेत्र में शुष्क एवं अत्यंत विषम जलवायु पाई जाती है और तापमान गर्मियों में अत्यधिक (49°C तक) तथा सर्दियों में न्यूनतम (3° C तक) रहता है।

थार के मरुस्थल में स्थित प्रमुख उद्यान 'राष्ट्रीय मरुउद्यान

मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान

इस क्षेत्र की प्रमुख फसलें बाजरा, मोठ, ग्वार, इत्यादि है तथा प्रमुख नदी 'लूनी 'है तथा प्रमुख नहर 'इंदिरा गाँधी' नहर है ।

इस क्षेत्र में तीन प्रकार का मरुस्थल पाया जाता है:-

1. इर्ग 2. हम्मादा 3. रेग

रेतीले मरुस्थल को 'इर्ग' कहा जाता है।

पथरीले मरुस्थल को हम्मादा कहा जाता है इसका विस्तार जैसलमेर, जोधपुर , बाड़मेर व जालौर तक है।

ऐसा मरुस्थल जिसमें रेत व पत्थर दोनों पाये जाते है अर्थात् मिश्रित मरुस्थल को ' रैंग' कहा जाता है।

प्रसिद्ध जन्तु वैज्ञानिक डॉ. ईश्वर प्रकाश ने राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र को पर्याप्त मात्रा में जैव विविधता के कारण **'रक्ष क्षेत्र** 'कहा है।

राज्य का मरुस्थल ऊष्ण मरुस्थल की श्रेणी में आता है। जैसलमेर की स्थानीय भाषा में धरियन कहा जाता है। धोरे या टीलों के तीन प्रकार होते है-

अनुद्धैर्य - हवा के समानान्तर बनने वाले

अनुप्रस्थः- हवा के लम्बत (समकोण पर) बनने वाले टीलें

बरखानः- अर्धचन्द्राकार आकृति वाले धोरे

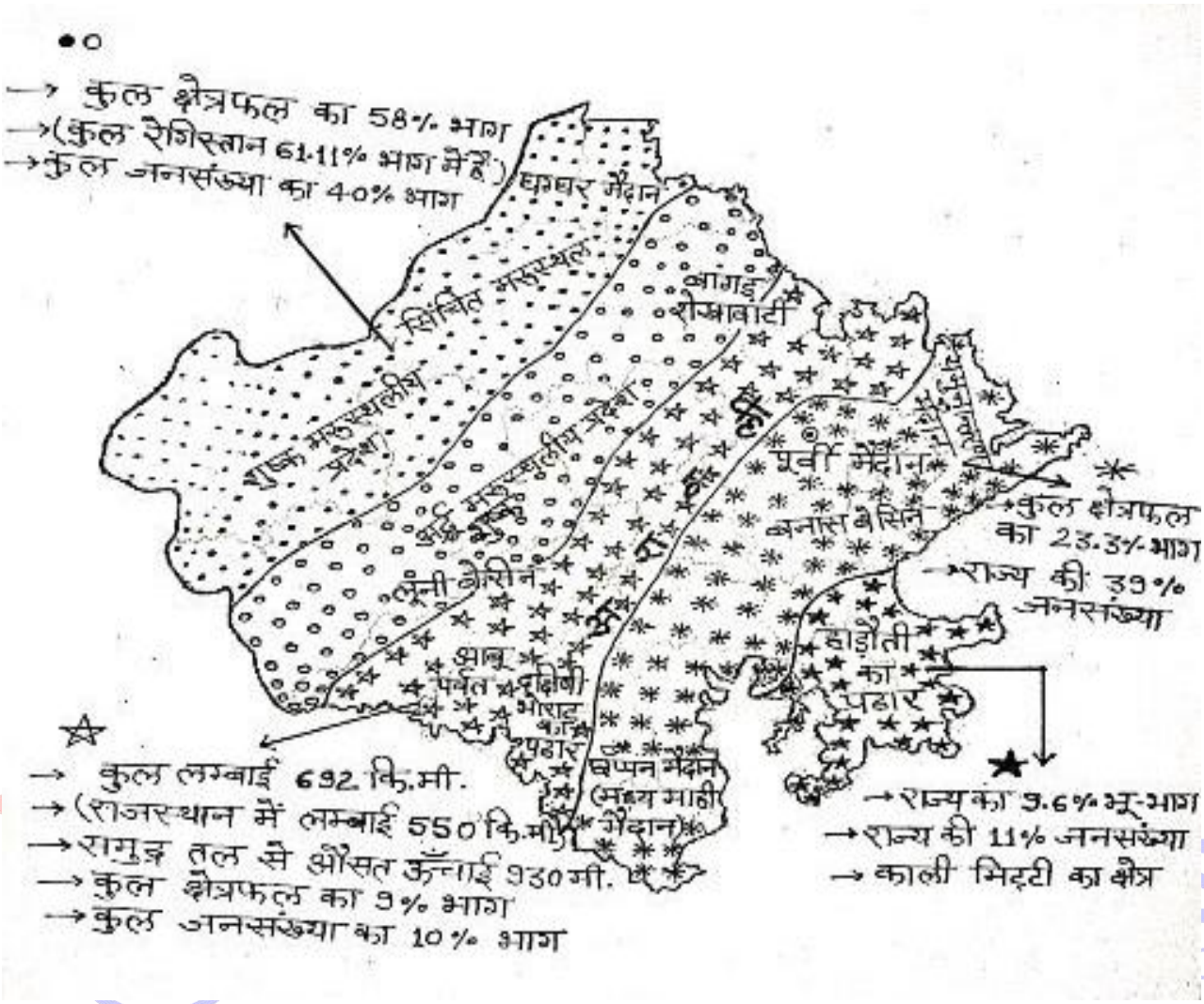

मरुस्थल में पाई जाने वाली प्रमख संरचनाए तथा शब्दावली

*1. **लाठी सीरीज** :- पाकिस्तान देश के सहारे (पास में) पोकरण से मोहनगढ़ तक की क्षेत्र लाठी सारिज के नाम से जाना जाता है।*

इसी क्षेत्र में जैसलमेर जिलें की सम तहसील में चन्दन गांव में एक मीठे पानी का जल स्त्रोत (कुआँ) है। जिससे प्रति घन्टे में लगभग 2.30 लाख लीटर मीठा पानी निकलता है । इसे चन्दन नलकूप या 'थार का घड़ा' भी कहा जाता है। इस कुएं का वास्तविक नाम 'चौहान' है।

***2. पीवणा** :- इस क्षेत्र में पाये जाने वाला जहरीला सर्प।*

***3. मावठ / महावठ / शीतकालीन वर्षा:** शीत काल में होने वाली वर्षा जो रबी की फसल के लिये उपयोगी होती है, मावठ कहलाती है।*

***4. नेहड़** - जालौर व बाड़मेर जिलें का क्षेत्र नेहड़ कहलाता था। नेहड़ का शाब्दिक अर्थ होता है 'समुद्र का जल'।*

मरुस्थलीय क्षेत्र में जल संचय के तरीके

***1. आगोर** :- प्राचीन काल में मरुस्थलीय क्षेत्र में वर्षा के जल का संचय करने के लिये टांके बनाये जाते थे , जिन्हे आगोर कहा जाता था*

***2. खड़ीन** :- कृषि के लिए वर्षा जल का संचय करना।*

*3. **नाडी** :- मानव के दैनिक आवश्यकताओं तथा पशुपालन के लिये वर्षा का जल संचय करना।*

*4. **टोबा** :- नाडी को कृत्रिम रूप से और अधिक गहरा करना टोबा कहलाता है।*

*5. **बेरी** :- खडीन तथा नाड़ी के पास जो जल का रिसाव होता था उस जल को पुनः उपयोग में लाने हेतु इनके आस-पास छोट-छोटे कुँए बना दिये जाते थे जिन्हे बेरी कहा जाता है।*

शुष्क मरुस्थल

उत्तर पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ वनस्पति नगण्य या नाम मात्र की पायी जाती है, तथा वर्षा बहुत ही कम मात्रा में होती है। इस क्षेत्र में वर्षा 0 से 25 से.मी. तक होती है।

इस क्षेत्र में कांटेदार झाड़ियां बहुतायात में पायी जाती है।

1. **बालूका स्तूप युक्त प्रदेश :-** उत्तर पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ धोरे/टीले या टीलों का निर्माण भी होता है। बालुका स्तूप युक्त प्रदेश है। बालूका स्तूप युक्त प्रदेश के अन्तर्गत गंगा नगर बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर तथा चुरू व पश्चिमी नागौर एवं जोधपुर जिला शामिल है।

2. **बालूका स्तूप मुक्त प्रदेश :-** उत्तर पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जो चट्टानों से अच्छादित है। इस क्षेत्र में जुरासिक काल के जीवाश्म के अवशेष पाये जाते है। इसका उदाहरण जैसलमेर जिलें में स्थित आंकल गाँव में 'वुड फॉसिल पार्क' है।

अर्द्ध शुष्क मरुस्थल

शुष्क मरुस्थल तथा अरावली के मध्य का क्षेत्र अर्द्ध शुष्क मरुस्थल के नाम से जाना जाता है।

यह प्रदेश शुष्क मरुस्थल से 25 से.मी. वर्षा रेखा द्वारा तथा अरावली प्रदेश में 50 से.मी. वर्षा द्वारा विभाजित होता है।

इस प्रदेश के अन्तर्गत पूर्वी चुरू, पश्चिमी झुन्झुनू, सीकर तथा जोधपुर , नागौर, पाली व अजमेर का अधिकांश भाग तथा बाड़मेर का दक्षिण-पूर्वी भाग शामिल है।

घग्घर का मैदान

राज्य के श्रीगंगानगर तथा हनुमानगढ़ जिलें में घग्घर नदी का प्रवाह क्षेत्र को घग्घर का मैदान के नाम से जाना जाता है।

घग्घर नदी का पाट स्थानीय भाषा में 'नाड़ी' तथा घग्घर नदी का मैदान स्थानीय भाषा में 'बग्गी' कहलाता है। घग्घर नदी के इस प्रवाही क्षेत्र में भूरी मटीयार मिट्टी पायी जाती है।

नोट :- हनुमानगढ़, गंगानगर के क्षेत्र में पत्थर की परत है जिसके कारण पानी जमीन के पेटे तक नहीं बैठ पाता है तथा ऊपर ही बचा रहता है तथा कुछ समय बाद दल - दल में परिवर्तित हो जाता है । इस दल - दल के परिणाम स्वरूप वातावरण में होने वाले समस्त परिवर्तनों को सेम समस्या कहा जाता है।

नोट :- हनुमानगढ़ जिलें का बंडो पोल गाँव सेम समस्या के लिए प्रदेश में जाना जाता है।

शेखावाटी का अन्तः प्रवाह क्षेत्र

इस क्षेत्र के अन्तर्गत राज्य के सीकर, चुरू व झन्झनूं जिलें आते है।

नोटः- इस क्षेत्र में चूनें की परत के कारण राज्य का सबसे ठण्डा एवं गर्म दोनों चुरू ही है।

नागौर का पठार

- नागौर क्षेत्र की भूमि में सतही मिट्टी पर नमक की मात्रा पाई जाती है। अतः इस क्षेत्र में पाई जाने वाली झीलें अधिकांशतः खारे पानी की झीलें है।
- इस क्षेत्र में भूमिगत जल में फ्लोराइड की मात्रा पाई जाती है, जिससे फ्लोरोसिस नामक रोग हो जाता है । इस रोग के कारण दांत पीले पड़ जातें है, तथा हड्डियां गलने लगती है। इसे कुबड़ समस्या भी कहा जाता है। अतः फ्लोराईड युक्त जल पट्टी का विस्तार 'कुबड़ पट्टी' कहलाता है।
- राज्य के नागौर तथा अजमेर जिलें में 'कुबड़ पट्टी' का विस्तार पाया जाता है।
- राज्य में सरिस्का के अतिरिक्त नागौर का पठार ऐसा क्षेत्र है जहाँ हरे कबूतर पाये जाते है। हरे कबूतर मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश राज्य में पाये जाते है।

लूणी बेसिन / गौड़वाणा प्रदेश

- लूनी नदी व इसकी सहायक नदियों का प्रवाह क्षेत्र मुख्य रूप से पाली, जोधपुर , नागौर, बाड़मेर , जालौर व अजमेर जिलें का क्षेत्र जहाँ लूनी नदी प्रवाहित होती है, लूनी बेसिन के नाम से जाना जाता है।
- इस क्षेत्र में बाड़मेर जिलें में छप्पन की पहाड़ियाँ स्थित है जिनका विस्तार जालौर जिलें में भी है । इन पहाड़ियों में ग्रेनाइट पाया जाता है। इस कारण जालौर जिलें को ग्रेनाइट सिटी भी कहा जाता है। छप्पन का पर्वत उदयपुर जिलें में स्थित है जबकि छप्पन का मैदान बांसवाड़ा जिलें में स्थित है।
- बाड़मेर जिलें में स्थित छप्पन की पहाड़ियों में जैनियों का प्रमुख तीर्थ स्थल नाकोडा जी स्थित है।
- बाड़मेर में हल्देश्वर पहाड़ियों पर स्थित 'पिपलुद' कस्बे को 'मारवाड़ का माउन्ट आबू' तथा राजस्थान का लघु माउन्ट आबू कहा जाता है।

5. मेंथा (मेड़ा) नदी -

मेंथा नदी का उद्गम जयपुर जिलें में स्थित मानोहर थाना क्षेत्र की पहाड़ियों से होता है । मेंथा नदी उत्तर दिशा में बहकर जाती है और सांभर झील में मिल जाती है । नागौर जिलें में स्थित प्रसिद्ध जैनियों कालूँवाणा तीर्थ स्थल" इसी मेंथा नदी के किनारे स्थित हैं।

6. काकनी नदी या काकनेय नदी -

काकनी नदी या काकनेय नदी का उद्गम जैसलमेर जिलें के कोठारी गांव से होता है । इस नदी को "मसूरड़ी नदी" के नाम से भी जाना जाता है यह केवल 17 किलोंमीटर बहती है अर्थात् इसकी कुल लंबाई 17 किलोंमीटर है। यह राजस्थान की सबसे छोटी आंतरिक प्रवाह वाली नदी भी है। इसका समापन स्थल जैसलमेर जिलें का बुझनी गांव है जहाँ यह बुझ झील का निर्माण करती है ।

7. रूपनगढ़ नदी -

यह सलेमाबाद (अजमेर) से निकलती है और सांभर के दक्षिण में विलीन हो जाती है इस नदी के किनारे निम्बार्क संप्रदाय की पीठ है।

राजस्थान में नदियों के किनारे बसे प्रमुख नगर -

1. हनुमानगढ़ (राजस्थान)-घग्घर नदी
2. कोटा (राजस्थान)-चम्बल नदी
3. चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)-बेड़च नदी
4. टोंक (राजस्थान)-बनास नदी
5. झालावाड़ (राजस्थान)-काली सिंध
6. गुलाबपुरा (राजस्थान)-खारी नदी
7. जालौर (राजस्थान)-सुकड़ी नदी
8. अनुपगढ़ (राजस्थान)-घग्घर नदी
9. नाथद्वारा (राजसमंद, राजस्थान)- बनास नदी
10. भीलवाड़ा (राजस्थान)-कोठारी नदी
11. विजयनगर (राजस्थान)-खारी नदी
12. सूरत गढ़ (राजस्थान)-घग्घर नदी
13. पाली (राजस्थान)-बांडी नदी
14. सुमेरपुर (पाली, राजस्थान)-जवाई नदी
15. आसींद (भीलवाड़ा, राजस्थान)-खारी नदी
16. सवाईमाधोपुर (राजस्थान)-बनास नदी
17. बालोतरा (बाड़मेर, राजस्थान)-लूनी नदी

अध्याय – 4

राजस्थान की झीलें

राजस्थान की झीलों को हम दो भागों में विभाजित करेंगे -

(अ)खारे पानी की झीलें, (ब) मीठे पानी की झीलें

(अ) खारे पानी की झीले -

1. सांभर झीलः-

- राजस्थान के जयपुर – फुलेरा मार्ग पर जयपुर से लगभग 65 किलोंमीटर दूर स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक एवं खारे पानी की झील है।
- इस झील का विस्तार 3 जिलों में है - जयपुर, अजमेर और नागौर ।
- इस झील की लंबाई दक्षिण पूरव से उत्तर पश्चिम की ओर लगभग 32 किलों मीटर है और चौड़ाई 3 से 12 किलोंमीटर है इसका कुल अपवाह क्षेत्र 500 वर्ग किलोंमीटर है।
- सांभर झील में मेंथा नदी, रूपनगढ़ नदी, खारी नदी और खंडेला नदी आकर मिलती हैं ।इस झील पर भारत सरकार की "हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड कंपनी" द्वारा उत्पादन कार्य किया जा रहा है ।इस झील में प्रति 4 मीटर की गहराई पर 350 लाख टन उत्पादन होता है जो भारत के कुल उत्पादन का 8.7% सांभर झील से ही उत्पादित होता है।

इस झील से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

सांभर झील "स्वाईसरुबीना"नामक शैवालों के लिए प्रसिद्ध है ।इस शैवाल से 60% प्रोटीन प्राप्त होता है।

यह झील अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए भी जानी जाती है जैसे -तीर्थ स्थली देव्यानी अर्थात् तीर्थों की नानी, शाकंभरी माता का मंदिर, संत हिमामुद्दीन की पुण्य भूमि, जहांगीर का ननिहाल, अकबर की विवाह स्थली, चौहानों की राजधानी

2. पचपदरा झीलः-

- ऐसा माना जाता है कि 400 ईसा पूर्व पंचानामक एक भील व्यक्ति के द्वारा एक दलदल को सुखाकर इस झील के आस - पास की बस्तियों का निर्माण

करवाया गया था इसलिए इस झील को पचपदरा झील कहते हैं

- यह झील राजस्थान राज्य के बाड़मेर जिलें के बालोतरा में स्थित हैं।
- इस झील से प्राचीन समय से ही खारवाल जाति के 400 परिवार मोरली वृक्ष की टहनियों से भी नमक के (क्रिस्टल) स्फटिक तैयार करते थे।

3. डीडवाना झीलः-

- यह झील नागौर जिलें के डीडवाना में स्थित हैं।
- इस झील से प्राप्त नमक खाने योग्य नहीं हैं। जिसे ब्रायन कहा जाता हैं।
- इस झील में राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स नामक दो उद्योग स्थापित किए गए हैं जो कृत्रिम रूप से कागज के उत्पादन का निर्माण करते हैं । इसके अलावा इस नमक का उपयोग चमड़ा उद्योग में भी होता हैं।
- $Na_2 SO_4$ वाले नमक का उपयोग चमड़ा साफ करने में, कागज गलाने में किया जाता हैं ।

4. लूणकरणसर झीलः-

- यह झील राजस्थान के बीकानेर जिलें में स्थित अत्यंत छोटी झील हैं।
- छोटी होने के कारण यहां से थोड़ी बहुत मात्रा में निकलने वाले नमक से स्थानीय लोगों को ही आपूर्ति हो पाती हैं।
- लूणकरणसर "मूंगफली" के लिए प्रसिद्ध होने के कारण "राजस्थान का राजकोट"कहलाता हैं।

राजस्थान में खारे पानी की छोटी-छोटी अन्य झीलें-

रेवासा झील सीकर में स्थित हैं। तालछापर झील चूरू में स्थित हैं। डेगाना झील नागौर, फलोदी झील जोधपुर, कावोद झील जैसलमेर, पोकरण जैसलमेर, कुचामन झील नागौर में स्थित हैं।

(ब) राजस्थान में मीठे पानी की झीलें –

1. पुष्कर झीलः-

- राजस्थान राज्य के अजमेर जिलें के पुष्कर नामक स्थान पर (अजमेर शहर से 11 किलो मीटर दूर) स्थित पुष्कर झील एक प्रसिद्ध झील हैं। यह राजस्थान की प्राचीन, प्राकृतिक एवं सबसे पवित्र झील हैं।
- ऐसा माना जाता हैं कि इस झील का निर्माण पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा करवाया गया था इसलिए इस झील का नाम "पुष्कर झील" पड़ा, लेकिन भौगोलिक मान्यताओं के अनुसार इस झील का निर्माण ज्वालामुखी से हुआ हैं इसलिए इसे क्रेटर झील भी कहा जाता हैं।
- इस झील के किनारे प्रसिद्ध ब्रह्मा जी का मंदिर स्थित हैं ऐसा माना जाता हैं कि ब्रह्मा जी के मंदिर में मूर्ति आद्यगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित की गई थी ।
- इस झील को अन्य नामों से भी पुकारा जाता हैं जैसे – तीर्थों का मामा, प्रयागराज का गुरु, सबसे पवित्र एवं सबसे दूषित झील, 52 घाट, हिंदुओं का पांचवा तीर्थ स्थल, कोंकण तीर्थ इत्यादि।
- इस झील के किनारे कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेला लगता हैं। यह मेला राजस्थान में आय की दृष्टी से सबसे बड़ा मेला हैं।
- पुष्कर झील में कुल 52 घाट हैं। इसमें एक महिला घाट भी हैं जो महिलाओं के स्नान के लिए बनवाया गया था, जिसका निर्माण मैडम मैरी के द्वारा करवाया गया था ।

2. जयसमंद झीलः-

- राज्य के उदयपुर जिलें में स्थित जयसमंद झील को ढेबर झील के नाम से भी जाना जाता हैं। यह झील उदयपुर से 40 किलोमीटर दूर स्थित हैं।
- इस झील का निर्माण गौतमी नदी, झामरी नदी तथा बगार नदी का पानी रोक कर मेवाड़ के राजा जयसिंह के द्वारा 1685-91 में करवाया गया था ।
- यह झील एशिया की दूसरी तथा राजस्थान की प्रथम मीठे पानी की सबसे बड़ी, कृत्रिम झील हैं।
- इस झील पर छोटे-बड़े कुल 7 टापू स्थित हैं जिन पर भील तथा मीणा जनजाति के लोग निवास करते हैं इनमें से सबसे बड़ा टापू "बाबा का भांगड़ा" हैं जबकि सबसे छोटा टापू "प्यारी" हैं।
- इस झील के एक टापू का नाम "बाबा का भांगड़ा" भी हैं, जिस पर वर्तमान में एक होटल संचालित किया जा रहा हैं इस होटल का नाम आइसलैंड रिसोर्ट हैं।
- इस झील की लंबाई 15 किलोमीटर तथा चौड़ाई अधिकतम 8 किलोमीटर हैं।

3. राजसमंद झीलः-

- इस झील का निर्माण मेवाड़ के राजा राजसिंह के द्वारा गोमती नदी का पानी रोककर सन् 1662 से 1676 के बीच में करवाया गया था । इस झील की कुल लंबाई 6.5 किलोमीटर तथा चौड़ाई 3 किलोमीटर हैं।

अध्याय – 3
गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से ।।वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया।
- जोधपुर के बाँक शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली प्रचलित थी ।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में गुर्जर-प्रतिहार के नाम से जाना गया ।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार गुर्जर प्रतिहार कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी भीनमाल (जालौर) थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के सर्वप्रथम उल्लेख से मिलती है ।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में कु-ची-लो (गुर्जर) देश का उल्लेख करता है । जिसकी राजधानी पि-लो-मो-लो (भीनमाल) में थी । अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को 'जुर्ज' भी कहा है।
- अल मसूदी प्रतिहारों को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को 'बोरा' कहकर पुकारता है।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था । कनिघंम ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है ।
- मुहणौत नैणसी (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल ।
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।

भीनमाल शाखा (जालौर)

संस्थापक - नागभट्ट प्रथम ।

- रघुवंशी प्रतिहारों ने चावडों से प्राचीन गुर्जर देश छीन लिया और अपनी राजधानी भीनमाल को बनाया । भीनमाल शाखा के प्रतिहारों की उत्पति के विषय में जानकारी ग्वालियर प्रशस्ति से मिलती है। जो प्रतिहार शासक भोज प्रथम के समय उत्कीर्ण हुई ।
- प्रसिद्ध कवि राजशेखर के ग्रंथों से भी भीनमाल के प्रतिहारों की जानकारी मिलती है ।

अवन्ति / उज्जैन शाखा

- नागभट्ट प्रथम के समय दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित ।

कन्नौज शाखा

- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।
- कवि वर्ष की उपाधि मुंज राजा को दी गई थी ।
- आभानेरी तथा राजौरगढ़ के कलात्मक वैभव गुर्जर प्रतिहार काल के है।

मण्डौर शाखा (जोधपुर)

संस्थापक - रज्जिल

- गुर्जर प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी मण्डौर थी ।
- गुर्जर प्रतिहारों की इन शाखाओं में सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण मण्डौर के प्रतिहार थे । मंडोर के प्रतिहार क्षत्रीय माने जाते है ।

हरिशचंद्र :-

- हरिशचंद्र को प्रतिहार वंश का संस्थापक माना जाता है । हरिशचंद्र को प्रतिहारों का गुरू/गुर्जर प्रतिहारों का आदि पुरूष/ गुर्जर प्रतिहारों का मूल पुरूष कहते हैं ।
- हरिशचंद्र की दो पत्नियों में से एक ब्राह्मण तथा दूसरी क्षत्रिय पत्नी थी । क्षत्रिय पत्नी का नाम भद्रा था ।
- इसकी क्षत्रिय पत्नी के चार पुत्र हुए जिनके नाम भोगभट्ट, कद्दक, रज्जिल और दह (दद्द) थे । इन चारों ने मिलकर मण्डौर को जीतकर गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की ।

रज्जिल: :-

- गुर्जर प्रतिहार राजवंश के आदिपुरूष हरिशचंद्र थे, तो मण्डौर के गुर्जर प्रतिहार राजवंश के संस्थापक रज्जिल थे ।
- रज्जिल ने मण्डौर को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।

नरभट्ट :-

- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नरभट्ट का उल्लेख पिल्लापल्ली नाम से किया है, जिसका शाब्दिक अर्थ साहसिक कार्य करने वाला होता है ।

नागभट्ट प्रथम (730 ई.-760 ई.)

- नागभट्ट प्रथम को 'नागवलोक' तथा इसके दरबार को नागवलोक दरबार कहा जाता था।
- नागभट्ट प्रथम को प्रतिहार साम्राज्य का संस्थापक कहा जाता है ।
- इसकी जानकारी हमें पुलिकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख से प्राप्त होती है ।
- नागभट्ट प्रथम ने भीनमाल को चावडों से जीता तथा 730 ई. में भीनमाल को राजधानी बनाया । इसने भीनमाल में प्रतिहार वंश की स्थापना की । नागभट्ट प्रथम ने आबू, जालौर आदि को जीतकर उज्जैन (अवन्तिका) को अपनी दूसरी राजधानी बनाया ।
- नागभट्ट प्रथम के समय सभी राजपूतवंश गुहिल, चौहान, परमार, राठौड़, चंदेल, चालुक्य इसके सामन्त के रूप में कार्य करते थे ।
- ग्वालियर अभिलेख के अनुसार नागभट्ट प्रथम ने म्लेच्छ (अरबी) सेना को पराजित कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया ।

वत्सराज (783 ई. - 795 ई.)

- वत्सराज देवराज व भूयिका देवी का पुत्र था ।
- वत्सराज भीनमाल में गुर्जर प्रतिहारों का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है ।
- वत्सराज ने कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत की, जो 150 वर्ष तक चला ।
- 150 वर्ष का त्रिपक्षीय संघर्ष कन्नौज को लेकर हुआ ।
- यह संघर्ष 8वीं सदी में प्रारंभ हुआ ।
- उत्तर भारत के गुर्जर प्रतिहार, दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट वंश, पूर्व में बंगाल के पालवंश के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ । इस संघर्ष में गुर्जर प्रतिहार विजयी हुए । परन्तु वत्सराज राष्ट्रकूट राजा ध्रुव से हारा था ।
- कन्नौज को कुश स्थल व महोदय नगर के नाम से जाना जाता था । कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत गुर्जर-प्रतिहार शासक वत्सराज के समय हुई।
- सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु (647 ई.) के बाद उत्तरी भारत की राजनीति की धुरी कन्नौज पर अधिकार करने हेतु संघर्ष प्रारंभ हुआ ।

त्रिपक्षीय संघर्ष के परिणाम

- कन्नौज पर (725 ई.-752 ई.) यशोवर्धन नामक शासक की मृत्यु के बाद तीन महाशक्तियों में संघर्ष प्रारंभ हुआ जो त्रिपक्षीय संघर्ष कहलाता है । ये तीन शक्तियाँ
- उत्तरी भारत के गुर्जर प्रतिहार
- पूर्व के पाल (बंगाल के)
- दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट
- त्रिपक्षीय संघर्ष के समय कन्नौज पर शक्तिहीन आयुधवंश (इन्द्रायुध, चक्रायुध) के शासकों का शासन था ।
- त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत आठवीं शताब्दी ईस्वी में हुई । त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रारंभ प्रतिहार वंश ने किया और इसका अंत भी प्रतिहार वंश ने ही किया।
- Tripartite conflict (त्रिपक्षीय संघर्ष) का प्रथम चरण गुर्जर-प्रतिहार वत्सराज , बंगाल के पाल शासक धर्मपाल व दक्षिण के राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के बीच हुआ ।
- वत्सराज ने कन्नौज पर शासित इन्द्रायुध को हराया व उसने पाल शासक धर्मपाल को मुंगेर (मुदगगिरी) के युद्ध में पराजित किया । किन्तु राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हुआ ।
- वत्सराज को रणहस्तिन (युद्ध का हाथी) की उपाधि प्राप्त थी । वत्सराज के समय 778 ई. में उद्योतन सूरी द्वारा 'कुवलयमाला ग्रंथ' की तथा जिन सेन सूरी द्वारा 783 ई. में 'हरिवंश पुराण' की रचना की गई ।
- वत्सराज शैव मत का अनुयायी था ।
- वत्सराज ने ओसियाँ (जोधपुर) में एक सरोवर तथा महावीर स्वामी का एक मंदिर बनवाया जो कि पश्चिम भारत का प्राचीनतम जैन मंदिर माना जाता है ।
- राजस्थान में प्रतिहारों का प्रमुख केन्द्र ओसियाँ (जोधपुर) था । वत्सराज के शासनकाल में बलिप्रबंध नामक काव्य ग्रंथ लिखा गया । जिसमें सती प्रथा, नियोग प्रथा एवं स्वयंवर प्रथा की जानकारी मिलती है ।

नागभट्ट द्वितीय (795-833 ई.)

- नागभट्ट द्वितीय की उपलब्धियों का वर्णन ग्वालियर प्रशस्ति में मिलता है ।
- अरब आक्रमणकारियों पर पूर्णतः रोक लगाने वाला प्रतिहार राजा नागभट्ट द्वितीय था ।

- नागभट्ट द्वितीय की दानशीलता एवं कन्यादान करने के कारण इन्हें 'कर्ण' की उपाधि दी गई। जिसका उल्लेख ग्वालियर अभिलेख में मिलता है ।
- 833 ई. में नागभट्ट द्वितीय ने गंगा में जल समाधी ली ।

रामभद्र (833-836 ई.)

- नागभट्ट द्वितीय के बाद कुछ समय (833 से 836 ई.) के लिए उसका पुत्र रामभद्र गद्दी पर बैठा। रामभद्र को पाल वंश के शासक से हार का मुँह देखना पड़ा।
- राम भद्र की रानी अप्पी से मिहिर भोज देव नामक पुत्र हुआ ।
- ग्वालियर शिलालेख के अनुसार रामभद्र सूर्य का भक्त था । अतः उसने अपने का नाम पुत्र का नाम मिहिर (सूर्य) भोज देव रखा था ।

मिहिर भोज (836-885 ई.)

- मिहिर भोज का शाब्दिक अर्थ 'सूर्य का प्रतीक' है।
- इन्होंने अपने पिता रामभद्र की हत्या कर प्रतिहारों के शासक बना, इस कारण मिहिर भोज को प्रतिहारों में पितृहंता कहा जाता है । मिहिर भोज कट्टर इस्लाम विरोधी था, उसने बलपूर्वक बहुत से मुसलमानों को हिंदु बनवाया ।
- अरब यात्री सुलेमान व राजतरंगिनी के लेखक कल्हण ने मिहिर भोज के शासन व्यवस्था की प्रशंसा की । कश्मीरी कवि कल्हण की राजतरंगिणी से मिहिर भोज की उपलब्धियों की जानकारी प्रात होती है ।
- 851 ई. में अरब यात्री 'सुलेमान' ने मिहिर भोज के समय भारत की यात्रा की, जिसका विवरण सुलेमान की पुस्तक किताब-उल-सिंध-वल-हिन्द में है ।
- गुर्जर प्रतिहारों की अश्व सेना तत्कालीन भारत में सर्वश्रेष्ठ थी । 893 ई. के एक प्रतिहार लेख से दण्डपाशिक नामक पुलिस अधिकारी का उल्लेख मिलता है ।

महेन्द्रपाल प्रथम (885-910 ई.)

- महेन्द्रपाल का गुरू व दरबारी कवि राजशेखर था ।
- राजशेखर के ग्रंथों में प्रथम शासक महेन्द्रपाल जिसे परमभट्टारक तथा महाराजाधिराज, परमेश्वर की उपाधियों से पुकारा गया ।
- महेन्द्रपाल प्रथम को 'रघुकुल तिलक चूड़ामणि, निर्भयराज व निर्भय नरेन्द, महीशपाल तथा महेन्दायुध' आदि नामों से भी पुकारा गया ।
- राजशेखर ने कर्पूरमंजरी, प्रबंधकोष, बाल रामायण, बाल भारत (प्रचण्ड पाण्डव), विद्वशाल भंजिका नाम से नाटक व काव्यमीमांसा, हरविलास, भुवनकोष नामक काव्य ग्रंथों की रचना की राजशेखर ने अपनी पत्नी अवन्ति सुंदरी के कहने पर ही 'कर्पूरमंजरी' की रचना की थी ।
- महेन्द्रपाल को 'निर्भय नरेश' कहा गया है ।
- इतिहासकार वी. एन. पाठक ने अपने ग्रंथ ' उत्तर भारत का राजनेतिक इतिहास' में प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल प्रथम को हिंदु भारत का अतिम महान हिंदू सम्राट माना है।

महिपाल प्रथम (914-943 ई.)

- महिपाल ने भी राजशेखर को आश्रय दिया था । राजशेखर ने महिपाल प्रथम को 'आर्यवृत्त का महाराजाधिराज, रघुकुल मुक्तामणि व रघुकुल मुकुटमणि' के नाम से पुकारा ।
- राजशेखर ने महिपाल को बाल भारत नाटक में रघुवंश मुक्तामणि (रघुवंशरूपी मोतियों में मणि के समान) एवं आर्यवृत का महाराजाधिराज लिखा है । महिपाल को विनायकपाल एवं हेरम्बपाल के नाम से भी जाना जाता है ।
- महिपाल के समय 915 ई. में अरब यात्री अलमसूदी भारत आया ।

महेन्द्रपाल-द्वितीय (945-948 ई.)

- इसके बाद गुर्जर-प्रतिहारों में चार शासक हुए देवपाल (948-49 ई.), विनायकपाल द्वितीय (953-54 ई.), महीपाल द्वितीय (955 ई.), विजयपाल द्वितीय (960 ई.) इनके समय गुर्जर-प्रतिहारों की अवनति हुई।

राज्यपाल :-

- प्रतिहार शासक राज्यपाल (राजपाल) के समय महमूद गजनवी ने कन्नौज पर 1018 ई. (12वां अभियान) में आक्रमण किया, जिससे डरकर राज्यपाल कन्नौज छोड़कर गंगा पार भाग गया ।

त्रिलोचनपाल :-

- राज्यपाल के बाद त्रिलोचनपाल प्रतिहारों का शासक बना ।
- जिसे महमूद गजनवी ने 1019 ई. में पराजित किया ।

यशपाल :-

- प्रतिहार वंश का अंतिम शासक यशपाल (1036 ई.) था ।
- 11वीं शताब्दी में कन्नौज पर गहड़वाल वंश ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया । इस प्रकार प्रतिहारों के साम्राज्य का 1093 ई. में पतन हो गया ।

क्षेत्र की लगभग 10,000 महिलाओं ने भाग लिया। किशोरी देवी स्वतंत्रता सेनानी सरदार हरलाल सिंह खर्रा की पत्नी थी।

श्रीमती सत्यभामा

बूंदी के स्वतंत्रता सेनानी नित्यानन्द नागर की पुत्रवधू सत्यभामा ने ब्यावर अजमेर आंदोलन (1932 ई) का नेतृत्व किया। सत्यभामा को गांधी जी की मानस पुत्री के रूप में भी जाना जाता है।

पन्नाधाय

पन्नाधाय मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह की धाय मां थी। मेवाड़ के सामन्त बनवीर ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर युवराज उदयसिंह की हत्या का भी प्रयास किया। पन्नधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान देकर उदयसिंह को किले से बाहर भेजकर उसकी प्राण रक्षा की।

अल्लाह जिलाई बाई

केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारे देस ..... गीत प्रख्यात मांड गायिका अल्लाह जिलाई बाई द्वारा गाया गया है। इनका जन्म 1 फरवरी 1902 ई. को बीकानेर में हुआ मांड गायिकी में विशिष्ट योगदान के लिए सन् 1982 में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। बाईजी को सन् 1983 में रॉयल अल्बर्ट हॉल में बी. बी. सी लंदन द्वारा कोर्ट सिंगर अवार्ड दिया गया।

गवरी देवी

गवरी देवी का जन्म 1920 ई. में जोधपुर में हुआ। मास्को में आयोजित भारत महोत्सव में गवरी देवी ने मांड गायिकी से श्रोताओं को सम्मोहित कर प्रदेश का नाम रोशन किया।

कालबेलिया नर्तकी गुलाबो

इनका जन्म 1960 में घुमंतू कालबेलिया समुदाय में हुआ। राजस्थान की आन, बाण, शान कही जाने वाली प्रसिद्ध कालबेलिया नर्तकी गुलाबो ने अपने नृत्यकला से राजस्थान की कला और संस्कृति को राजस्थान ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। नर्तकी गुलाबो सपेरा को राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने पद्मश्री अलंकरण से सम्मानित किया जा चुका है।

कला संस्कृति

अध्याय – 1

राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ

राजस्थान के लोक देवता

(1) गोगाजी चौहान

- पंच पीरों में प्रमुख स्थान। प्रतीक चिह्न - सर्प।

  जन्म - संवत् 1003 में, जन्म स्थान - ददरेवा (चूरू)।
  ये चौहान वंश के थे
  पिता - जेवरजी चौहान, माता - बाछल दे,
  पत्नी - कोलुमण्ड (फलौदी, जोधपुर) की राजकुमारी केलमदे (मेनलदे)।
  अन्य नाम- गोगापीर, नागराज का अवतार, नागों के देवता, गौ-रक्षक देवता, जाहिर पीर (प्रत्यक्ष पीर), बाप्पा, जोहर पीर।

- ददरेवा (चूरू) में गोगा जी की शीर्ष मेडी (शीषमेडी) तथा नोहर (हनुमानगढ़) में धड़मेड़ी / धुरमेड़ी / गोगामेड़ी स्थित है।
- गोगानवमी (भाद्रपद कृष्णा नवमी) को गोगाजी की याद में गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में भव्य मेला भरता है। सवारी - नीली घोड़ी।

  'गोगाजी की ओल्डी' नाम से प्रसिद्ध गोगाजी का अन्य पूजा स्थल - साँचौर (जालौर)।

  गोगाजी की आराधना में श्रद्धालु सांकल नृत्य करते हैं। गोगामेड़ी में एक हिन्दू व एक मुस्लिम पुजारी हैं।

  खेजड़ी के वृक्ष के नीचे गोगाजी का निवास स्थान माना जाता है। गोगाजी की ध्वजा सबसे बड़ी ध्वजा मानी जाती है।

  केसरिया कुँवरजी –गोगाजी के पुत्र जो लोकदेवता के रूप में पूजे जाते हैं ।

(2) पाबूजी राठौड़ -

जन्म - 1239 ई. में, जन्म स्थान - कोलुमण्ड गाँव (फलौदी, जोधपुर) में हुआ।
पिता - धाँधल जी राठौड़, माता - कमलादे,

- पन्नी – फूलमदे/ सुपियार दे सोढ़ी। (अमरकोट के राजा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री)

  उपनाम- लक्ष्मण के अवतार, गौं रक्षक देवता, ऊँटो के देवता, प्लेग रक्षक देवता ।

- पाबूजी की घोड़ी- केसर कालमी (यह काले रंग की घोड़ी उन्हें देवल चारणी ने दी, जो जायल नागौर के काछेला चारण की पत्नी थी)।
- सन् 1276 ई. में जोधपुर के देचू गाँव में देवल चारणी की गायों को जींद राव खींची(बहनोई) से छुड़ाते हुए पाबूजी वीर गति को प्राप्त हुए, पाबूजी की पत्नी उनके वस्त्रों के साथ सती हुई। इस युद्ध में पाबूजी के भाई बूड़ोजी भी शहीद हुए।
- पाबूजी की फड़ नायक जाति के भील भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- मारवाड़ में साण्डे (ऊँटनी) लाने का श्रेय पाबूजी को जाता है।
- ऊंटों की पालक जाति राईका/रेबारी/देवासी के आराध्य देव पाबूजी हैं।
- पाबूजी की जीवनी 'पाबू प्रकाश' के रचयिता आशिया मोड़जी ।
- हरमल व चाँदा डेमा पाबूजी के रक्षक थे।
- माघ शुक्ला दशमी तथा भाद्रपद शुक्ला दशमी को कोलुमण्ड गाँव (फलौदी, जोधपुर) में पाबूजी का प्रसिद्ध मेला भरता है।
- पाबूजी के पवाड़े (गाथा गीत) प्रसिद्ध हैं, जो माठ वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं।
- प्रतीक चिह्न - भाला लिए हुए अश्वारोही तथा बायीं ओर झुकी हुई पाग।

(3) हड़बूजी -

- पिता का नाम- मेहाजी सांखला (भुंडेल, नागौर)।
- हड़बूजी बाबा रामदेवजी के मौसेरे भाई थे।
- गुरु - बालीनाथ।
- संकटकाल में हड़बूजी ने जोधपुर के राजा राव जोधा को तलवार भेंट की और राव जोधा ने इन्हें बेंगटी (फलौदी, जोधपुर) की जागीर प्रदान की।
- बेंगटी में इनका प्रमुख पूजा स्थल है। यहाँ हड़बूजी की गाड़ी (छकड़ाधूऊँट गाड़ी) की पूजा होती है। इस गाड़ी में हड़बूजी विकलांग गायों के लिए दूर-दूर से घास भरकर लाते थे।
- हड़बूजी की सवारी सियार मानी जाती है।

(4) रामदेवजी -

- रामसापीर, रूणेचा रा धणी व पीरां रा पीर नाम से प्रसिद्ध है ।
- रामदेव जी को कृष्ण का अवतार माना जाता है।
- पिता का नाम- अजमलजी तंवर, माता-मैंणा दे, पत्नी-नेतल दे (नेतल दे अमरकोट के राजा दल्लेसिंह सोढा की पुत्री थी।)
- लोकमान्यता के अनुसार रामदेवजी का जन्म उंडूकाश्मीर गाँव (शिव-तहसील, बाड़मेर) में भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को हुआ।
- समाधि- रूणेचा (जैसलमेर) में रामसरोवर की पाल पर भाद्रपद शुक्ला दशमी को ली।
- मक्का से पधारे पंचपीरों ने उन्हें कहा कि हम तो केवल पीर हैं, पर आप तो पीरों के पीर हैं।
- प्रमुख शिष्य- हरजी भाटी, आईमाता।
- गुरु का नाम-बालीनाथ। बालीनाथजी का मन्दिर- मसूरिया, जोधपुर में।
- सातलमेर (पोकरण) में भैरव राक्षस का वध रामदेवजी ने किया।
- नेजा - रामदेवजी की पचरंगी ध्वजा।
- जातरू - रामदेवजी के तीर्थ यात्री।
- रिखियां - रामदेवजी के मेघवाल भक्त।
- जम्मा - रामदेवजी की आराधना में श्रद्धालु लोग रिखियों से जम्मा जागरण (रात्रि कालीन सत्संग) दिलवाते हैं।
- कुष्ठ रोग निवारक देवता।
- हैजा रोग के निवारक देवता।
- सवारी - लीला (हरा) घोड़ा।
- कामड़ पंथ का प्रारम्भ किया।
- राजस्थान में कामड़ पंथियों का प्रमुख केन्द्र पादरला गाँव (पाली) इसके अलावा पोकरण (जैसलमेर) व डीडवाना (नागौर) में भी कामड़ पंथी निवास करते हैं।
- रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को रामदेवरा (जैसलमेर) में बाबा रामदेवजी का भव्य मेला भरता है। पश्चिमी राजस्थान का यह सबसे बड़ा मेला साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए प्रसिद्ध है।
- रामदेवजी का प्रतीक चिह्न - पगल्यां (पत्थर पर उत्कीर्ण रामदेवजी के प्रतीक के रूप में दो पैर)।

- रामदेवजी एकमात्र ऐसे लोकदेवता थे, जो कवि थे। 'चौबीस बाणियां' रामदेवजी की प्रसिद्ध रचना है।
- रामदेवरा में स्थित रामदेवजी के मंदिर का निर्माण बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने करवाया था।
- रामदेवजी का पूजा स्थल-रामदेवरा/रूणेचा (जैसलमेर), मसूरिया (जोधपुर), बिराठिया (पाली), बिठूजा (बालोतरा, बाड़मेर), सूरताखेड़ा (चित्तौड़गढ़), छोटा रामदेवरा (जूनागढ़, गुजरात)।

(5) मेहाजी -

- जन्म- बापिणी (जोधपुर)
- पिता का नाम – गोपलराज सांखला
- मांगलियों के ईष्ट देव होने के कारण इन्हें मांगलिया मेहाजी कहते हैं।
- इनके घोड़े का नाम - किरड़ काबरा।
- जैसलमेर के राव राणंगदेव भाटी से युद्ध करते हुए शहीद।
- बापिनी गाँव (ओसियां, जोधपुर) में प्रमुख पूजा स्थल है ।
- कृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्णा अष्टमी) को लोकदेवता में हाजी की जन्माष्टमी मनाई जाती हैं।

(6) तेजाजी -

- जन्म - 1074 ई., खड़नाल/खरनाल (नागौर) में माघ शुक्ला चतुर्दशी को।
- तेजाजी नागवंशीय जाट थे।
- पिता का नाम-ताहड़जी जाट,
- माता का नाम-राजकुंवरी/रामकुंवरी,
- पत्नी-पेमलदे (पनेर के रायचन्द्र की पुत्री थी।)। 7 सितम्बर, 2011 को सचिन पायलट ने खरनाल (नागौर) में तेजाजी पर 5 रु. का डाक टिकट जारी किया गया ।
- तेजाजी ने लाछा गुर्जरी की गायों को मेर (वर्तमान आमेर) के मीणाओं से छुड़ाया।
- सुरसरा (किशनगढ़, अजमेर) में जीभ पर साँप काटने से तेजाजी की मृत्यु।
- घोड़ी का नाम-'लीलण'।
- तेजाजी की मृत्यु की सूचना उनकी घोड़ी ने घर आकर दी।
- तेजाजी के पुजारी को घोड़ला कहते थे।
- काला और बाला के देवता, कृषि कार्यों के उपकारक देवता, गौरक्षक देवता के रूप में पूजनीय।
- सेंदरिया, ब्यावर, भावतां, सुरसरा (अजमेर) तथा खरनाल (नागौर) में तेजाजी के प्रमुख पूजा स्थल हैं।

(7) देवनारायणजी -

- जन्म - 1243 ई., में माघ षष्ठी को गोठा दंडावण आसींद (भीलवाड़ा) में हुआ था ।
- देवनारायण जी के बचपन का नाम-उदयसिंह था।
- बगड़ावत नागवंशीय गुर्जर परिवार में जन्म हुआ ।
- इनके अनुयायी गुर्जर जाति के लोग इन्हें विष्णु का अवतार मानते हैं।
- पिता- सवाईभोज, माता- सेढू खटाणी देवी, पत्नी-पीपलदे।
- घोड़ा - लीलागर
- इनकी गाथा 'बगड़ावत महाभारत' के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- देवजी की फड़-गुर्जर जाति के कुँआरे भोपे जंतर वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं। इनके मन्दिर में मूर्ति की बजाय ईंटों की पूजा नीम की पत्तियों के साथ होती है।
- 1 मंतर =1 जंतर, जंतर वाद्य यंत्र को 100 मंतर (मंत्र) के समान माना गया है।
- सबसे प्राचीन फड़, सबसे लम्बी फड़ तथा सर्वाधिक प्रसंगों वाली फड़ देवनारायण जी की फड़ है।
- भारत सरकार ने राजस्थान की जिस फड़ पर सर्वप्रथम डाक टिकट जारी किया वह देवनारायण जी की फड़ है।
- 2 सितम्बर, 1992 को 5 रु. का डाक टिकट जारी किया था ।
- गुर्जरों का तीर्थ स्थल-सवाईभोज का मंदिर आसींद (भीलवाड़ा) में स्थित है ।
- जोधपुरिया (टोंक) में देवजी का प्रमुख पूजा स्थल हैं।

(8) वीर कल्लाजी राठौड़ -

- जन्म – उनका जन्म मेड़ता राजपरिवार में आश्विन शुक्ल 8, विक्रम संवत 1601 को हुआ था। जन्म स्थल- मेड़ता (नागौर)।
- पिता - राव अचल जी, दादा-आससिंह ।

में नाचता मोर, पेड़ों की छाया में बैठे शिकारी, फव्वारों के पास विचरण करते प्रेमी युगल।

3. इस शैली में प्रमुखतः हरे रंग का प्रयोग हुआ है।

4. पुरुष आकृति - लंबा पतला शरीर, बूड़ी मूंछ, गोलाकार ललाट, अरुणिमा युक्त झुकी पगड़ियाँ, घुटने तक लंबे पारदर्शक जामें।

5. स्त्री आकृति - गोल मुख, कमल के समान आँखे, छोटी गर्दन लंबी बाँह, पतला शरीर, लाल एवं पारदर्शक चुनरी को दर्शाया गया है।

- चित्रकार-सुरजन, डाल, अहमद, रामलाल, भीखराज।

दुगारी उपशैली

- नैनवा (बूंदी) के पास स्थित सीताराम मंदिर की चित्रशाला में चित्रांकित शैली।
- चित्रों में स्वर्णकलम का प्रयोग, भगवान राम केन्द्रित चित्र प्रधानता।
- वनस्पति रंग की प्रधानता वाली शैली।
- प्रमुख चित्र मत्स्यावतार व कश्यपावतार।

चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएं

संस्था	स्थान
चितेरा	जोधपुर
धोरां	जोधपुर
तूलिका कलाकार परिषद	उदयपुर
टखमण -24	उदयपुर
कलावृत	जयपुर
पैंग	जयपुर
आयाम	जयपुर
क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप	जयपुर
अंकन	भीलवाड़ा

राजस्थानी चित्रकला संग्रहालय

पोथीखाना	जयपुर
पुस्तक प्रकाश	जोधपुर
सरस्वती भण्डार	उदयपुर
जैन भण्डार	जैसलमेर
कोटा संग्रहालय	कोटा
अलवर संग्रहालय	अलवर

अध्याय – 6

राजस्थान की हस्तकला

1. ब्लू पॉटरी -

चिनी - मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंग से चित्रकारी करना।

- यह कला मूल रूप से पर्शिया ईरान की है।
- राजस्थान में इसे लाने का श्रेय मानसिंह को है।
- इस कला का सर्वाधिक विकास जयपुर शासक रामसिंह द्वितीय के समय हुआ था।
- इस कला को पुर्नजिवित करने का श्रेय कृपाल सिंह शेखावत को है जिनका जन्म स्थान सीकर जिला है।
- कृपाल सिंह शेखावत को 1974 में पदम् श्री पुरस्कार दिया जा चुका है।
- ब्ल्यू पॉटरी की एकमात्र महिला कलाकार नाथी बाई है।

2. ब्लेक पॉटरी - ब्लेक पॉटरी कोटा की प्रसिद्ध है।

3. कागजी पॉटरी-कागजी पॉटरी अलवर की प्रसिद्ध है।

4. मोलेला पॉटरी:-मोलेला पॉटरी राजसमन्द की प्रसिद्ध है।

5. बिकानेरी पॉटरी:-इस पॉटरी में लाख का प्रयोग किया जाता है।

मीनाकारी -सोने चाँदी के गहनों पर मीना जड़ाई का कार्य मीनाकारी कहलाता है।

थेवा कला -काँच पर सोने की मीनाकारी को थेवा कला कहा जाता है।

रत्नाभुषण - हिरे - जवाहारात-पन्ना का कार्य रत्नाभुषण कहलाता है।

- विश्व की सबसे बड़ी मण्डी जयपुर है।

कोफ्तगिरी -

- फौलाद से बनी वस्तुओं पर सोने के पतले तारों से जड़ाई को हि कोफ्तगिरी कहते हैं।

इसके प्रमुख केन्द्र जयपुर व अलवर है।

बादला

- जस्ते से निर्मित पानी की बोतल जिसके चारों तरफ रंगीन कपड़ा लगा हुआ होता है उसे बादला कहते हैं।
- यह जोधपुर के प्रसिद्ध है।

बंधेज

- बंधेज के लिए जयपुर, जोधपुर व शेखावाटी प्रसिद्ध हैं।

- जयपुर के लहरिये बंधेज के लिए प्रसिद्ध है ।
- जोधपुर के बंधेज के साफे प्रसिद्ध है ।
- शेखावाटी के पाटोदा के बंधेज के लुगड़े प्रसिद्ध है।

रंगाई -

1. अजरख प्रिंट -
- यह बाड़मेर की प्रसिद्ध है ।
- इसमें लाल व काला रंग अधिक प्रयुक्त होता है।

2. मलीर प्रिंट बाड़मेरः-
- इसमें कत्थई व काला रंग प्रयुक्त होता है ।

3. सांगानेरी प्रिंट जयपुरः-
- इसमें कृत्रिम रंगों का प्रयोग होता है ।

4. बगरू प्रिंट जयपुरः-
- इसमें पेड़ - पौधां से प्राकृतिक रंगा का उपयोग होता हैं ।

5. अजम प्रिंट - अकोला चित्तौड़गढ़ः-
- इस प्रिंट में लाल व हरे रंग का प्रयोग होता है।
- इसमें दोनों तरफ से छपाई की जाती हैं ।
- सवाई माधोपुर में मोम का दाबु प्रसिद्ध है ।
- गेंहु का बिछण सांगानेर, बगरू का प्रसिद्ध हैं ।
- मिट्टी का दाबु बालोतरा (बाड़मेर) का प्रसिद्ध है ।

गलीचा -
- यह कला मूल रूप से ईरान की है ।
- राजस्थान में इसका प्रसिद्ध केन्द्र जयपुर व टोंक है।

नमदे
- यह मुख्य रूप से टोंक व बिकानेर का प्रसिद्ध है।

दरियाँ
- दरियों के लिए नागौर प्रसिद्ध हैं तथा दौंसा का लवाण गाँव भी प्रसिद्ध है ।

पत्थर की मूर्तियाँ
- यह डूंगरपुर व बाँसवाड़ा के तलवाड़ा की प्रसिद्ध है ।

टेराकोटा से बनी मूर्तियाँ -
- इसके लिए डूंगरपुर का गलियाकोट प्रसिद्ध है। इसी गलियाकोट में दाऊदी बोहरा समाज की छतरी भी है।

कठपुतली उद्योग -
- यह उदयपुर का प्रसिद्ध हैं।

उस्ता कला -
- ऊँट की खाल पर बारिक चित्रकारी व विभिन्न प्रकार की डिजाइनों को उस्ता कला कहते हैं ।
- इसके लिए बिकानेर प्रसिद्ध हैं ।
- इसका प्रसिद्ध कलाकार हिसामुद्दीन था ।

गोटा उद्योग -
- यह उद्योग खण्डेला (सीकर) व बस्सी (चित्तौड़) का प्रसिद्ध है ।

अध्याय - 7
राजस्थान के प्रसिद्ध मेले

- **पुष्कर मेला** - यह मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक भरता है।
- **कल्पवृक्ष मेला** - यह मेला मांगलियावास (अजमेर) में श्रावण मास की हरयाली अमावस्या को भरता है।
- **कार्तिक पशु मेला** - यह पशु मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल 8 से मार्गशीर्ष 2 तक भरता है।
- **नारायणी माता का मेला** - यह मेला बरवा डूंगरी सरिस्का (अलवर) में वैशाख शुक्ल एकादशी को भरता है।
- **मल्लीनाथ पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा क्षेत्र में चैत्र कृष्णा एकादशी से चैत्र शुक्ला एकादशी तक भरता है।
- **हल्देश्वर महादेव शिवरात्रि मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के पीपलूद (छप्पन की पहाड़ियों के बीच यह मारवाड़ का लघु माउन्ट आबू है।) में शिवरात्रि के अवसर पर भरता है।
- **रानी भटियाणी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के जसोल क्षेत्र में कार्तिक वदी पंचमी को भरता है।
- **नाकोड़ाजी का मेला**-यह मेला बाड़मेर जिले के नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर में पोष कृष्ण दशमी को भरता है।
- **बजरंग पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के सिणधरी क्षेत्र में मंगसर वदी तृतीया को भरता है।
- **जम्भेश्वर मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के मुकाम-तालवा (नोखा) में वर्ष में दो बार - फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को भरता है।
- **नागणेची माता का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले में नवरात्रा के अवसर पर भरता है।
- **कपिल मुनि का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के श्री कोलायत जी में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **करणी माता का मेला** - यह मेला देशनोक (बीकानेर) में नवरात्रा (कार्तिक एवं चैत्र माह में) में भरता है।

घोटिया अम्बा मेला - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घोटिया (बारीगामा) नामक स्थान पर चैत्र अमावस्या को (जिले का सबसे बड़ा ग्रामीण मेला) भरता है।

- **कल्लाजी का मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के गोपीनाथ का गढ़ा नामक स्थान पर आश्विन सुदी नवरात्रि प्रथम रविवार को भरता है।

अध्याय – 3

भारत का भूगोल

1. पूर्वी तटीय मैदान का एक अन्य नाम कोरोमंडल तटीय मैदान है ।
2. भारतीय मानक समय 82.5° E रेखांश पर अपनाया जाता है ।
3. भारत का मानक समय ग्रीनविच माध्य समय से $5\frac{1}{2}$ घंटे आगे है ।
4. भारत के दक्षिण छोर का नाम निकोबार द्वीप में स्थित इंदिरा पॉइंट है ।
5. भारत के दक्षिणी छोर को इंदिरा पॉइंट कहा जाता है ।
6. क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत संसार का सातवां सबसे बड़ा देश है ।
7. भारत का क्षेत्रफल, पाकिस्तान से लगभग चार गुना बड़ा है।
8. भारतीय उपमहाद्वीप मूलतः गोंडवानालैंड का एक अंग था ।
9. दक्षिण ध्रुव प्रदेश (अंटार्कटिका)में स्थित भारत के स्थायी अनुसंधान केंद्र का नाम दक्षिण गंगोत्री है।
10. हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले की सीमा चीन के साथ लगती है।
11. भारत का सबसे बड़ा संघ राज्य क्षेत्र अंडमान और निकोबार द्वीप समूह है।
12. राज्यों अरुणाचल प्रदेश, असम और मणिपुर समूह के साथ नागालैंड की साझी सीमाएं हैं।
13. भारत के राजस्थान राज्य का क्षेत्रफल सबसे अधिक है।
14. आन्ध्र प्रदेश राज्य की तटरेखा सबसे लंबी है।
15. भारत की तटरेखा 7500 किमी है।
16. लक्षद्वीप द्वीपसमूह अरब सागर में स्थित है।
17. लक्षद्वीप में 36 द्वीपसमूह हैं ।
18. अंडमान निकोबार द्वीप में 'गद्दीदार चोटी' (सैंडिल पीक)उत्तरी अंडमान में स्थित है।
19. पश्चिम बंगाल की सीमाएं तीन देशों के साथ लगती हैं।
20. आन्ध्रप्रदेश और तमिलनाडु के तटीय भू-भाग को कोरोमंडल कहते हैं।
21. केरल के तट को मालाबार तट कहते हैं।
22. भारत की सबसे लंबी सुरंग, जवाहर टनल जम्मू और कश्मीर राज्य में स्थित है।
23. 'स्मार्ट सिटी' कोचीन में स्थापित की जा रही है।
24. दीव एक द्वीप गुजरात से हट कर है।
25. "गुजरात तट से दूर जिस विवादास्पद तटीय पट्टी पर भारत और पाकिस्तान बातचीत कर रहे हैं, उसका नाम सर क्रीक है।
26. प्रस्तावित समुद्र मार्ग 'सेतुसमुद्रम' मन्नार की खाड़ी समुद्री वीथिकाओं (Sea-lanes) से गुजरने वाली नहर है।
27. भारत का पुडुचेरी संघ शासित प्रदेश ऐसा है, जिसमें चार जिले हैं, किंतु उसके किसी भी जिले की सीमा, उसके किसी अन्य जिले की सीमा से नहीं मिलती।
28. संघ राज्य क्षेत्र पुडुचेरी की सीमा कर्नाटक के साथ नहीं लगती है ।
29. झीलों के अध्ययन को लिम्नोलाजी कहते हैं।
30. जोजी-ला दर्रा श्रीनगर और लेह को जोड़ता है।
31. कुल्लू घाटी धोलाधर और पीर पंजाल के बीच स्थित है।
32. कुल्लू घाटी धोलाधर और पीर पंजाल पर्वतीय श्रेणियों "पर्वत मालाओं" के बीच स्थित है।
33. हिमाचल प्रदेश में स्थित दर्रा शिपकिला है।
34. माउंट एवरेस्ट को सागरमाथा भी कहते हैं।
35. हिमालय की सबसे पूर्वी चोटी नमचा बरवा है।
36. गोडविन आस्टिन एक शिखर है ।
37. भारत में सबसे ऊँची चोटी के-2 गोडविन आस्टिन है।
38. अरावली पर्वत हिमालयी श्रंखला का अंग नहीं है।
39. बृहत्तर (ग्रेटर) हिमालय का दूसरा नाम हिमाद्रि है।
40. नाग तीबा और महाभारत पर्वत मालाएं निम्न-हिमालय में शामिल हैं।
41. भारत में सबसे ऊँचा पठार लद्दाख पठार है।
42. प्रायद्वीप भारत में उच्चतम पर्वत चोटी अनाईमुडी है।
43. अनाईमुडी शिखर सह्याद्री में स्थित है।
44. पीर पंजाल पर्वत श्रेणी भारत में स्थित है।
45. पंचमढ़ी पर्वतीय स्थल को 'सतपुड़ा की रानी' कहते हैं।

46. लोकटक झील, जिस पर जलविद्युत परियोजना का निर्माण किया गया था, मणिपुर राज्य में स्थित है।
47. 'लोकटक' एक झील है ।
48. लोनार झील महाराष्ट्र में स्थित है।
49. सबसे बड़ी मानव निर्मित झील गोविंद सागर है।
50. नागा, खांसी और गारो पहाड़ियां पूर्वांचल पर्वतमाला में स्थित हैं।
51. शिवसमुद्रम जलप्रपात कावेरी नदी के मार्ग में पाया जाता है।
52. शिवसमुद्रम कावेरी नदी द्वारा बनाया गया जलप्रपात है।
53. बलतोड़ा हिमनद कराकोरम पवर्तमाला में स्थित है।
54. भारत का सबसे ऊँचा जलप्रपात कर्नाटक राज्य में है।
55. भारत में सबसे ऊँचा जलप्रपात जोग प्रपात है।
56. सबसे ऊँचा भारतीय जलप्रपात गरसोप्पा है।
57. ऊँचे क्षेत्रों में लैटेराइट मृदा की रचना अम्लीय होती है।
58. पर्वतीय स्लोपों पर मृदा अपरदन को समोच्च रेखीय जुताई द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।
59. भारतीय उत्तरी मैदानों की मृदा सामान्यतः तलोच्चन द्वारा बनी है।
60. कपास के उत्पादन के लिए सबसे अच्छी मिट्टी काली लावा मिट्टी है।
61. लोनी और क्षारीय मृदा का भारत में एक और नाम कल्लर है।
62. व्यर्थ भूमि के अंतर्गत अधिकतम क्षेत्र वाला राज्य राजस्थान है।
63. पेट्रोलाजी में चट्टान का अध्ययन किया जाता है।
64. मृदा की लवणता चालकता मापी से मापी जाती है।
65. भारत के भू-भाग में 35 प्रतिशत भाग पर वर्ष में 75 सेमी. से कम वर्षा होती है।
66. भारत का सबसे सूखा भाग पश्चिम राजस्थान है।
67. भारत की जलवायु मानसूनी है।
68. अक्टूबर और नवंबर के महीनों में भारी वर्षा कोरोमंडल तट पर होती है।
69. उत्तरी पूर्वी मानसून से तमिलनाडु प्रदेश में वर्षा होती है।
70. वायुमंडल में प्रायः गर्मी विकिरण से आती है।
71. दक्षिणी-पश्चिमी मानसून की अवधि के दौरान तमिलनाडु सूखा रहता है क्योंकि यह वृष्टिछाया क्षेत्र में स्थित है।
72. गुवाहाटी से चंडीगढ़ तक मानसूनी वर्षा की प्रवृत्ति असमान होती है।
73. वर्ष में 50 सेमी. से कम वर्षा वाला क्षेत्र कश्मीर में लेह है।
74. भारत के धन के प्रदेश 100 सेमी से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में स्थित हैं।
75. दो नदियों के बीच उपजाऊ भूमि को दोआब कहते हैं।
76. भारत में प्रायद्वीपीय नदी से सबसे ऊँचा निकास बेसिन कृष्णा है।
77. भारतीय प्रायद्वीप की सबसे लंबी नदी गोदावरी है।
78. भारत की गोदावरी नदी को वृद्ध गंगा कहा जाता है।
79. नासिक गोदावरी नदी के किनारे स्थित है।
80. तिब्बत में सांगपो कहलाने वाली नदी ब्रह्मपुत्र है।
81. सिंधु नदी का उद्गम कैलाश पर्वतमाला से होता है।
82. भारत में यमुना नदी को 'खुला नाला' कहा जाता है।
83. भारत में नर्मदा, ताप्ती व दामोदर नदी विभ्रंश-घाटी में बहती है।
84. भागीरथी और अलकनंदा के संगम पर स्थित नगर देव प्रयाग है।
85. भागीरथी और अलकनंदा गंगा में देव प्रयाग पर मिलती हैं।
86. भागीरथी और अलकनंदा का संगम देव प्रयाग पर होता है।
87. बिहार का शोक कोसी नदी है।
88. उत्तर-पूर्वी भारत में बहने वाली राष्ट्र परीय नदी ब्रह्मपुत्र है।
89. विजयवाड़ा कृष्णा नदी के किनारे स्थित है।
90. सतपुड़ा और विंध्य के बीच नर्मदा नदी बहती है।
91. सूरत ताप्ती नदी के तट पर स्थित है।
92. भारतीय मरुस्थल की एक महत्त्वपूर्ण नदी लूनी है।
93. 'आकस्मिक बाढ़' का संबंध चक्रवाती तूफान से है।
94. भारत का कृत्रिम बंदरगाह चेन्नई या मद्रास है।

विविध

- **महत्वपूर्ण दिवस**

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दिवस 2022

जनवरी	समारोह की तिथि
विश्व ब्रेल दिवस	4 जनवरी
विश्व युद्ध अनाथ दिवस	6 जनवरी
प्रवासी भारतीय दिवस	09 जनवरी
राष्ट्रीय युवा दिवस	12 जनवरी
सड़क सुरक्षा सप्ताह	11 - 17 जनवरी
लाल बहादुर शास्त्री पुण्य-तिथि	11 जनवरी
सेना दिवस	15 जनवरी
NDRF स्थापना दिवस	19 जनवरी
सुभाष चन्द्र का जन्मदिन	23 जनवरी
पराक्रम दिवस	23 जनवरी
राष्ट्रीय बालिका दिवस	24 जनवरी
अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस	24 जनवरी
राष्ट्रीय मतदाता दिवस	25 जनवरी
राष्ट्रीय पर्यटन दिवस	25 जनवरी
गणतंत्र दिवस - 26 जनवरी	26 जनवरी
अंतर्राष्ट्रीय प्रलय स्मृति दिवस	27 जनवरी
लाला लाजपत राय जयंती	28 जनवरी
विश्व कुष्ठ उन्मूलन दिवस	शहीद दिवस
शहीद दिवस	30 जनवरी
फरवरी	**समारोह की तिथि**
भारतीय तटरक्षक दिवस	1 फरवरी
विश्व आद्रभूमि दिवस	1 फरवरी
विश्व कैंसर दिवस	4 फरवरी
अंतर्राष्ट्रीय मानव भ्रातृत्व दिवस	4 फरवरी
International day of Zero tolerance for female genital mutilation	6 फरवरी
International Epilepsy Day	8 फरवरी
सुरक्षित इंटरनेट दिवस	9 फरवरी
विश्व दाल दिवस	10 फरवरी
राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस	10 फरवरी
विज्ञान में बालिकाओं तथा महिलाओं का दिवस	11 फरवरी
विश्व यूनानी दिवस	11 फरवरी
राष्ट्रीय उत्पादकता दिवस	12 फरवरी
विश्व रेडियो दिवस	13 फरवरी
वेलेंटाइन्स डे	14 फरवरी
अंतर्राष्ट्रीय बचपन कैंसर दिवस	15 फरवरी
विश्व सामाजिक न्याय दिवस	20 फरवरी
विश्व पैंगोलिन दिवस	20 फरवरी
अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	21 फरवरी
World thinking day	22 फरवरी

न्यायालय के अधिवक्ता विपुल माहेश्वरी और पत्रकार अनिल माहेश्वरी हैं।

3. पुस्तक "बियॉन्ड द मिस्टी वेइल" पुस्तक की लेखिका आराधना जौहरी हैं। यह पुस्तक देश विदेश में उत्तराखंड के दिव्य मंदिरों के प्रमाणिक परिचय देती हैं।
4. "द मैकमोहन लाइन: ए सेंचुरी ऑफ डिस्कॉर्ड" नामक पुस्तक के लेखक जे जे सिंह हैं। इस पुस्तक के लेखक अरुणाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल और पूर्व सेनाध्यक्ष के पद पर जनरल जे जे सिंह रह चुके हैं। यह किताब भारत -चीन सीमा विवाद पर जनरल जे जे सिंह के अनुभवों और शोध पर आधारित हैं।
5. "टॉम्ब ऑफ सैंड" नामक पुस्तक के लेखक गीतांजलि श्री हैं। गीतांजलि श्री को उनके उपन्यास "Tomb of Sand" के लिए साल 2022 का अंतर्राष्ट्रीय बुकर प्राइज दिया गया हैं। ऐसा पहली बार है कि जब किसी हिंदी उपन्यास के लिए किसी लेखिका को दुनिया के प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय बुकर प्राइज से सम्मानित किया गया हैं। यह भारत के लिए बड़े गर्व की बात हैं। लेखिका और साहित्यकार गीतांजलि श्री का यह उपन्यास मूल रूप से हिंदी में "रेत समाधि " के नाम से प्रकाशित हुई थी और इसका अंग्रजी अनुवाद "Tomb of Sand" नाम से डेजी रॉकवेल ने किया हैं।
6. क्रंच टाइम : नरेंद्र मोदीज नेशनल सिक्योरिटी क्राइसिस पुस्तक के लेखक श्रीराम चौलिया हैं। यह पुस्तक चीन और पाकिस्तान के साथ संकट के दौरान पीएम मोदी की निर्णय लेने की श्रृंखला का विश्लेषण करती हैं।
7. हिंदी कविता संग्रह "मैं तो यहां हूं" के लेखक प्रो. रामदरश मिश्र हैं। हिंदी के विरिष्ठ कवि एवं लेखक "प्रो. रामदरश मिश्र " मिश्र को वर्ष 2021 के लिए 31 वें सरस्वती सम्मान के लिए चुना गया हैं। और इस पुस्तक का प्रकाशन वर्ष 2015 में हुआ था।
8. "नॉट जस्ट ए नाईटवॉचमैन : माई इनिंग्स विद BCCI" पुस्तक के लेखक विनोद राय हैं। यह पुस्तक विनोद राय ने लिखी हैं।
9. "बिरसा मुंडा -जनजाति नायक" पुस्तक के लेखक आलोक चक्रवाल हैं।
10. "पूर्वी भारत का सिख इतिहास" पुस्तक के लेखक अविनाश मोहपात्रा हैं। इस पुस्तक में बिहार, असम, बांग्लादेश, पश्चिम बंगाल , ओड़िसा, अरुणाचल प्रदेश , सिक्किम और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का सिख इतिहास शामिल हैं।
11. "द मैजिक ऑफ मंगलाजोड़ी" पुस्तक के लेखक अविनाश मोहापात्रा हैं। कॉफी टेबल बुक ""द मैजिक ऑफ मंगलाजोड़ी" पुस्तक के लेखक अविनाश मोहापात्रा हैं। इस पुस्तक में विभिन्न छवियों और विवरणों के माध्यम से चिल्का झील में मंगलाजोड़ी का एक विहंगम दृश्य प्रदान करती हैं।
12. "द मेवरिक इफेक्ट" पुस्तक के लेखक हरिश मेहता हैं। "द मेवरिक इफेक्ट" पुस्तक अनकही कहानी बताती हैं की कैसे 1970 और 80 के दशक में एक बैंड ऑफ ड्रीमर ने NASSCOM बनाने और भारत में आईटी क्रांति का मार्ग प्रशस्त करने के लिए हाथ मिलाया।
13. "टाइगर ऑफ द्रास : कैप्टन अनुज नैयर, 23 कारगिल हीरो" पुस्तक के लेखक मीना नैयर हैं। इस पुस्तक में कैप्टन अनुज नैयर (23 वर्ष) की कहानी हैं। जो 1999 के कारगिल युद्ध के दौरान द्रास सेक्टर को सुरक्षित करने के लिए लड़ते हुए शहीद हुए थे। कैप्टन अनुज नैयर को 2000 में दूसरे सर्वोच्च वीरता पुरस्कार महावीर चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया था।
14. "डिकोडिंग इंडियन बाबूडोम" पुस्तक के लेखक अश्विनी श्रीवास्तव हैं।
15. "द बॉय हू रोट ए कॉन्स्टिट्यूशन ए प्ले फॉर चिल्ड्रन ऑन ह्यूमन राइट्स " पुस्तक के लेखक राजेश तलवार हैं।
16. अनफिल्ड बैरल्स : इंडियाज ऑयल स्टोरी " पुस्तक के लेखक ऋचा मिश्रा हैं।
17. "द लिटिल बुक ऑफ जॉय" पुस्तक के लेखक दलाई लामा और डेसमंड टूटू हैं।
18. "उड़ान एक मजदुर बच्चे की " पुस्तक के लेखक मिथिलेश तिवारी हैं।
19. द मिलेनियल योगी " पुस्तक के लेखक दीपम चटर्जी हैं।
20. मोर देन जस्ट सर्जरी : लाइफ लेसन्स बियॉन्ड द ऑटो पुस्तक के लेखक डॉ. तेहमटन एराच उडवाडीया हैं।
21. "ऑन बोर्ड : माई इयर्स इन बीसीसीआई" आत्मकथा के लेखक रत्नाकर शेट्टी हैं।

अध्याय-I

श्रृंखला
Series

वर्णानुक्रम श्रृंखला (Alphabetical Series):- alphabetical series से अंग्रेजी के वर्णमाला की position पर आधारित अलग -अलग तरीके से प्रश्न पूछें जाते हैं ।

यहाँ हम सभी तरीकों को जानेगें जो एग्जाम में अक्सर पूछें जाते हैं ।

TYPE I :- इस प्रकार के प्रश्नों में अंग्रेजी वर्णमाला की position दिए गए नम्बर के अनुसार ज्ञात करनी होती है इसके लिए प्रत्येक अक्षर के नम्बर पता होने चाहिए जिससे इस टाइप के प्रश्नों को हल करने में दिक्कत न आये।

स्थान (POSITION):-

सीधी श्रृंखला :-

बाएँ से दाएँ →

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
N	O	P	Q	R	S	T	U	V	W	X	Y	Z
14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26

← दाएँ से बाएँ

अक्षर की बाईं ओर से गणना करने के लिए अक्षर A से तथा दाईं ओर से गणना करने के लिए अक्षर Z से गिनना प्रारम्भ करते हैं ।

इन वर्ण की संख्या को याद रखने के लिए आप याद रख सकते हैं EJOTY को

E J O T Y

5 → 10 → 15 → 20 → 25

किसी वर्ण की विपरीत संख्या ज्ञात करने के लिए 27 में से उसकी मूल संख्या को घटाना होगा ।

जैसे : E = 27 - 5 = 22

E की मूल संख्या 5 होती है इसकी विपरीत संख्या 22 होगी ।

अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ व दाएँ का निर्धारण करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए ।

- इसमें यह मान लिया जाता है कि सभी अक्षर हमारे जैसे सामने की ओर देख रहे हैं।
- इसमें अंग्रेजी वर्णमाला निम्नलिखित क्रम में हो सकती है।
  (i) Usual (A-Z)
  (ii) Reverse (Z-A)
  (iii) 1st half Reverse (M-A, N-Z)
  (iv) 2nd half Reverse (A-M, Z-N)
  (v) Both half Reverse (M-A, Z-N)
  (vi) Middle term
  (vii) Mixed Series
  (viii) Variable

  A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z

  ← बाईं ओर दाईं ओर →

- **ठीक बाएँ** का अर्थ होता है उस अक्षर के तुरंत पहले का अक्षर **जैसे :-**
  K के ठीक बाएँ का अक्षर = J
- **ठीक दाएँ** का अर्थ होता है उस अक्षर के तुरंत बाद का अक्षर **जैसे :-**
  P के ठीक दाएँ का अक्षर = Q
- **आपके दाएँ से** का अर्थ है आपके दाएँ से बाईं ओर मतलब Z से A की ओर

  A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z ←

- **आपके बाएँ से** का अर्थ है आपके बाएँ से दाएँ ओर मतलब A से Z की ओर

  A B C D E F G H I J K L M N O P Q R S T U V W X Y Z

- **बाईं ओर** का अर्थ है, दाएँ से बाएँ और मतलब अक्षर Z से A की ओर **जैसे :**

  Z Y X .....D C B A

- **दाईं ओर** का अर्थ होता है, बाएँ से दाएँ ओर मतलब अक्षर A से Z की ओर **जैसे :-**

  A B C .....X Y Z

Note: दाएँ = Right = R

बाएँ = Left = L

दाएँ से 8 = R_8

बाएँ से 12 = L_{12}

- यदि प्रश्न में दोनों शब्द बाएँ से बाएँ या दाएँ से दाएँ होगा तो उत्तर ज्ञात करने के लिए हमेशा घटाएंगे **जैसे :**

Ex1- अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 20 वें अक्षर के बाएँ 10 वाँ अक्षर कौन-सा होगा ?

बाएँ से – 20 वाँ

बाएँ से - 10 वाँ

बाएँ से - 20 -10 = 10 वाँ

बाएँ से 10 वाँ अक्षर = j

Ex2- अंग्रेजी वर्णमाला में दाएँ से 20 वें अक्षर के दाएँ 10 वाँ अक्षर कौन-सा होगा ?

दाएँ से (20 -10) वाँ अक्षर = दाएँ से 10 वाँ = बाएँ से (27-10) = बाएँ से 17 वाँ = Q

- अगर आपको पता है की दाएँ से 17 वाँ Q होता है तो आप सीधे उत्तर Q दे सकते हैं लेकिन अगर आपको नहीं पता है तो आप विपरीत अक्षर निकालने के लिए 27 में से उस अक्षर की संख्या को घटा कर दाएँ से 17 वाँ अक्षर निकाल सकते हैं ।
- यदि प्रश्न में पहला शब्द दाएँ हो तो जोड़ने या घटाने के बाद प्राप्त उत्तर को हमेशा 27 से घटाएंगे ।
- यदि अंग्रेजी वर्णमाला को विपरीत क्रम में लिख दिया जाए तो नियम भी विपरीत हो जायेगा मतलब जो 27 में से घटाने वाली क्रिया प्रथम शब्द बाएँ आने पर की जाएगी

- यदि प्रश्न में दोनों शब्द बाएँ से दाएँ या दाएँ से बाएँ होंगे तो उत्तर ज्ञात करने के लिए हमेशा जोड़ेंगे जैसे :-

Ex- अंग्रेजी वर्णमाला में दाईं ओर से 15वें अक्षर के बाएँ ओर 5 वाँ अक्षर कौन-सा होगा?

दाएँ से = 15 वाँ

बाएँ से = 5 वाँ

दाएँ से = 15 + 5 = 20 वाँ

बाएँ से = 27 – 20 = 7 वाँ = G

Ex- अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 25 वें अक्षर के बाएँ 22 वें अक्षर के दाहिने 8 वाँ अक्षर कौन-सा होगा ?

Solution: $L_{25} - L_{22} - R_8$

$L_3 - R_8$

L_{11} = K Ans.

Ex- अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 16 वें अक्षर के दाहिनें आठवें अक्षर के बाएँ 22 वाँ अक्षर कौन-सा होगा?

Solu. $L_{16} - R_8 - L_{22}$

$L_{24} - R_{22} = L_2$ = B **Ans.**

Note: -

यदि मान Positive (26+) में आये तो 26 घटाकर Answer करते हैं।

यदि Value negative में आये तो 26 जोड़कर Answer करते हैं।

Ex - अंग्रेजी वर्णमाला में बाएँ से 10 वें अक्षर के बाएँ 5 वें अक्षर के बाएँ 9 वाँ अक्षर कौन-सा होगा ?

Solu. $L_{10} - L_5 - L_9$

$L_5 - L_9$

$L_{(-4)} = L_{22}$ = V **Ans.**

Note:

Position from left end =

27- Position from Right end

अध्याय-2

क्रम व्यवस्था

Rank system

जब एक या दो व्यक्तियों का स्थान पंक्ति में दाएँ या बाएँ से लेकर या कुल संख्या अथवा दाएँ बाएँ का प्रश्न पूछा जाता है तो यह परीक्षण क्रम व्यवस्था कहलाता है

नोटः '>' बढ़ते क्रम का चिन्ह

'<' घटते क्रम का चिन्ह

प्रकार (Type) – 1 एक व्यक्ति के विपरीत मान

Note:- यदि एक व्यक्ति का दाएँ से स्थान R तथा बाएँ से स्थान L हो तो कुल व्यक्तियों की संख्या ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है -

$$T = R + L - 1$$

∴ T = कुल व्यक्तियों की संख्या

R = दाएँ / आगे / ऊपर / शिखर

L = बायें/ पीछे / नीचे तल

उदाहरण - विद्यार्थियों की कतार में राहुल बाएँ से 15वें स्थान पर तथा दाएँ से 11वें स्थान पर है, कतार में बैठे कुल विद्यार्थियों की संख्या ज्ञात करो।

हल – $T = R + L - 1$

$T = 15 + 11 - 1$

$T = 25$

Note:-यदि एक व्यक्ति का दाएँ से स्थान R तथा कुल व्यक्तियों की संख्या T हो तो बायें से स्थान ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है।

$$L = T - R + 1$$

उदाहरण - 50 छात्रों की कतार में मोहन दाएँ से 15 वें स्थान पर है तो बाएँ से उसका स्थान क्या होगा?

हल – $L = T - R + 1$

$L = 50 - 15 + 1$

$35 + 1 = 36$

Note:-यदि एक व्यक्ति का बाएँ से स्थान L तथा कुल व्यक्तियों की संख्या T हो तो दाएँ से स्थान ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है।

$$R = T - L + 1$$

उदाहरण - 60 छात्रों की कतार में मिलन बायें से तीसरे स्थान पर है, दाएँ से उसका स्थान क्या होगा?

हल – $R = T - L + 1$

$R = 60 - 35 + 1$

$R = 25 + 1$

$R = 26$

प्रकार (Type) - 2 दो व्यक्तियों का आपस में स्थान बदलना :-

Note:-जब दो व्यक्ति आपस में स्थान बदल ले तो कतार में बैठे कुल व्यक्तियों की संख्या ज्ञात करना।

एक की नई स्थिति + दूसरे की पुरानी स्थिति -1

उदाहरण- छात्रों की कतार में रोहित दाएँ से 11 वें स्थान पर है तथा मोहित बायें से 15 वें स्थान पर है, यदि यह दोनों आपस में स्थान बदल ले तो रोहित दाएँ से 17 वें स्थान पर आ जाता है तो बताइए कतार में कुल कितने छात्र हैं?

हल-एक की नई स्थिति + दूसरे की पुरानी स्थिति - 1

$= 17 + 15 - 1$

$= 32 - 1 = 31$

प्रकार (Type) - 3 दो व्यक्तियों के साथ मध्य की संख्या

कतार में अधिकतर संख्या = एक का बायाँ + दूसरे का बायाँ+ मध्य

उदाहरण - एक कतार में राम का स्थान बाएँ से 20 वाँ श्याम का बाएँ से 15 वाँ है। इन दोनों के बीच 2 छात्र हैं तो कतार में कुल कितने छात्र हैं ?

हल-20 + 15 + 2 = 37

कतार में न्यूनतम संख्या ⇒

एक का दायाँ+ दूसरे का बायाँ - मध्य -2

उदाहरण - एक कतार में राम का स्थान दाएँ से 20वाँ व श्याम का बाएँ से 15वाँ है। इन दोनों के बीच 2 छात्र हैं तो कतार में कुल छात्रों की संख्या बताओ।

हल- 20 + 15 - 2 - 2 = 31

प्रश्न अभ्यास

1. एक पंक्ति में मोहन दोनों सिरो से छठा है तो पंक्ति में कुल कितने लड़के हैं ?

(a) 13 (b) 11

(c) 12 (d) 10

हल :

T = R + L - 1

6 + 6 - 1 = 12 - 1 = 11

2. किसी भी छोर से शुरू करने पर यदि किसी पंक्ति में आपका नंबर 11 वां है तो यह बताइये की पंक्ति में कितने व्यक्ति हैं ?

(a) 11 (b) 20

(c) 21 (d) 22

हल :-

T = R + L - 1

11 + 11 -1 = 22 - 1 = 21

3. एक पंक्ति में अजय का स्थान दोनों छोर से 16 वां है। उस पंक्ति में कितने लोग हैं ?

(a) 29 (b) 30

(c) 31 (d) 32

हल:

T = R + L - 1

16 + 16 - 1 = 32 - 1 = 31

4. अंकित का अपनी कक्षा में ऊपर से 9वां तथा नीचे से 38वां स्थान है तो कक्षा में कुल कितने छात्र हैं ?

(a) 45 (b) 46

(c) 47 (d) 48

हल :

T = R + L - 1

= 9 + 38 - 1

= 47 - 1 = 46

5. राशन की दुकान में बहुत बड़ी लाइन है, तो उस लाइन में रमेश का स्थान आगे से 16वां व पीछे से 15वां है, तो बताइये लाइन में कुल कितने लोग खड़े हैं?

(a) 30 (b) 31

(c) 32 (d) 33

हल :

T = R + L - 1 = 16 + 15 - 1 = 31 - 1 = 30

व्याख्या

हम जानते हैं कि फरवरी को छोड़कर वर्ष के शेष 11 महीनों में एक बार 29 तारीख आती है।

अतः ऐसी 29 तारीखों की संख्या

= 400 x 11 = 4400

400 वर्षों में 97 लीप वर्ष होते हैं, इसमें फरवरी का 29 तारीखों की संख्या = 97

∴ 29 तारीखों की कुल संख्या

= 4400 + 97 = 4497

(7) उत्तर)-A)

व्याख्या

किसी सप्ताह का प्रथम दिन रविवार होता है।

(8)उत्तर-(D)

व्याख्या

वर्ष 2012 लीप वर्ष है, क्योंकि यह अंक 4 से पूर्णतः विभाजित हो जाता है।

(9) उत्तर(C)

व्याख्या

वर्ष 2000 शताब्दी लीप वर्ष है क्योंकि यह संख्या 400 से पूर्णतः विभाजित हो जाता है।

(10) उत्तर(C)

व्याख्या

सामान्य वर्ष में वर्ष का पहला दिन एवं अंतिम दिन दोनों ही समान होते हैं।

अध्याय-7

लुप्त संख्या

MISSING NUMBER

इस प्रकार के प्रश्नो में एक आकृति दी हुई होती है जिसमे कुछ अंक दिए हुए होते हैं ।इन अंको में एक अंक की जगह प्रश्न चिन्ह दिया हुआ होता है तथा ये अंक एक विशेष क्रम में होते हैं । हमें इसी क्रम को पहचान कर छुपे हुए अंक को खोजना होता है ।

Q.1 दिये गये विकल्पों में से लुप्त संख्या ज्ञात कीजिए।

8	15	22
29	?	43
50	57	64

(A) 36

(B) 34

(C) 50

(D) 32

Ans : A

HINT :- 8 + 7 = 15 , 15 + 7 = 22

इसी प्रकार ,

29 + 7 = 36 , 36 + 7 = 43

Q.2 दिये गये विकल्पों में से लुप्त संख्या ज्ञात कीजिए।

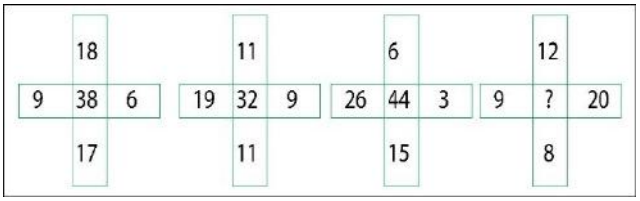

(A) 7

(B) 40

(C) 36

(D) 9

Ans : D

Q.3 लुप्त संख्या ज्ञात कीजिये।

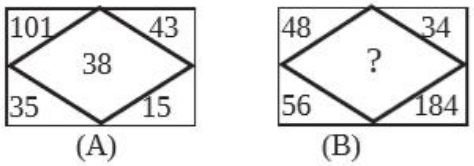

(A) 127

(B) 142

(C) 158

(D) 198

Ans : B

Q.4 निम्नलिखित प्रश्न मे दिये गए विकल्पो मे से लुप्त संख्या ज्ञात कीजिए ।

49, 46, 43, 40, ?, 34

(A) 38

(B) 37

(C) 36

(D) 39

Ans : B

Q.5 उस वर्ण युग्म का चयन कीजिए,जिसे निम्नलिखित श्रृंखला में प्रश्न चिह्न (?) से प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

BA, DC, FE, HG, ? , LK

(A) IJ

(B) JI

(C) LM

(D) ML

Ans : B

Q.6 दिये गये विकल्पों में से लुप्त संख्या ज्ञात कीजिए।

72	44	68
91	?	86
43	66	37

(A) 33

(B) 22

(C) 11

(D) 55

Ans : B

Q.7 लुप्त संख्या ज्ञात कीजिये।

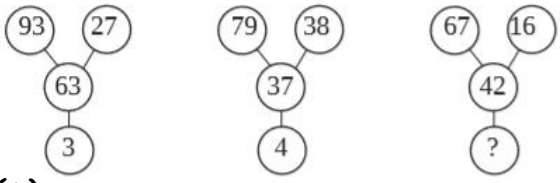

(A) 5

(B) 6

(C) 8

(D) 9

Ans : D

Q.8 एक अनुक्रम दिया गया है, जिसमे से एक पद लुप्त है । दिये गए विकल्पो मे से वह सही विकल्प चुनिए, जो अनुक्रम को पूरा करे।

COT, DQU, ESV, FUW, ?

(A) GWY

(B) GVX

(C) GWX

(D) GVY

Ans : C

Q.9 दिए गए चित्र में लुप्त संख्या का पता लगाए।

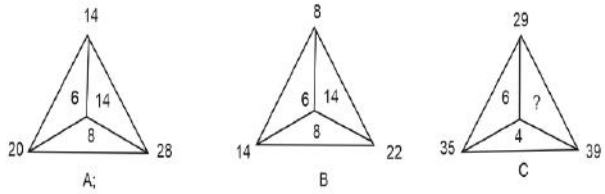

(A) 14

(B) 22

(C) 16

(D) 10

Ans : D

Q.10 दिए गए चित्र में लुप्त संख्या का पता लगाए।

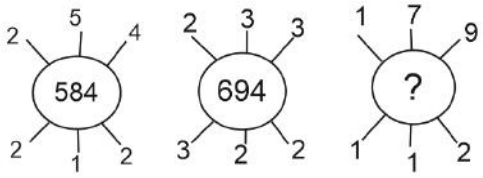

(A) 826

(B) 792

(C) 934

(D) 678

Ans : B

Q.11. दी गई आकृति के आधार पर विकल्पों में से लुप्त संख्या का पता लगाए ।

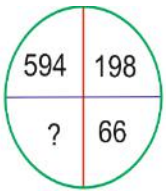

(A) 12

(B) 11

(C) 33

(D) 22

Ans . D

Q.12 दिए गये विकल्पों में से लुप्त संख्या ज्ञात कीजिए ।

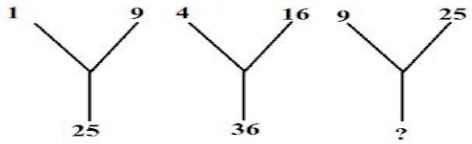

(A) 47
(B) 49
(C) 50
(D) 57

ans:(b) 49

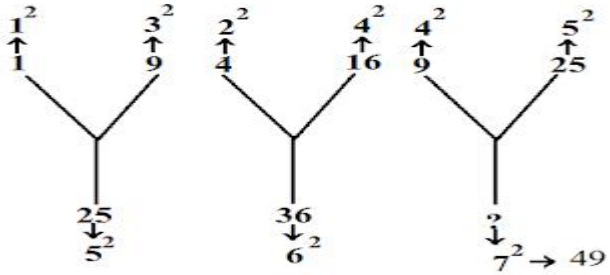

अतः ? के स्थान पर 49 होगा । प्रश्न को ध्यानपूर्वक अवलोकन करते हैं , तब पता चलता है कि प्रत्येक संख्या किसी न किसी संख्या का वर्ग है । अतः अब हमें तरीका पता चल चूका है अब उसी तरीके से हल करते है ।

Q.17 दिए गये संख्या में से लुप्त संख्या ज्ञात कीजिए।

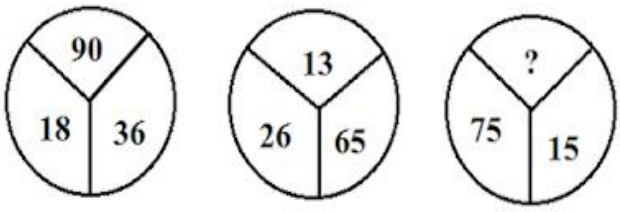

(A) 30
(B) 75
(C) 45
(D) 60

ans:(a) 30

दिए हुए संख्या को क्रमवार लिखते है ।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/j53pta

Online order - https://bit.ly/3xjbC7f

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE